रूपकों की परम्परा एवं नाट्यशास्त्र

डॉ0 सच्चिदानन्द उपाध्याय

संस्कृत साहित्य एक अन्यन्त महत्वपूर्ण तथा कमनीय अंग है ''नाट्य''। सम्पूर्ण विश्व में संस्कृत साहित्य की महत्ता एवं रसमयता को उजागर करने वाला यही नाट्य साहित्य है क्योंकि अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक के मानवीय संस्पर्श नाट्य कौशल तथा रमणीय रस पेशलता ने ही विश्व के विभिन्न विधानों को चमत्कृत करके उन्हें संस्कृत साहित्य के अनुशीलन की ओर हठात् प्रेरित किया।

नाट्यशास्त्र के साथ–साथ दृश्य काव्य है इसमें मुख्यतः दृश्यत्व को ही है। अन्य सभी इन्द्रियों की अपेक्षा चक्षुरिन्द्रिय से ग्रहण किया गया प्रभाव अधिक स्थायी होता है। यह सर्वविदित मनोवैज्ञानिक तथ्य है। यह नाट्य साहित्य नेत्र से देखा जाकर सीधा हृदय को स्पर्श करता हैं वेशभूषा, आंगिक संचालन, रंगमंच सज्जा तथा भाव प्रदर्शन आदि समवेत सुन्दर अभिनय से प्रस्तुत किया जाता हुआ तत्कालिक पात्र नट में जीवन्त होकर दर्शक को तन्मय कर देता है और दर्शक अनायास ही रस समुद्र में निमग्न हो जाता है।